मुझसे), कि उसने अपना एकलौता पुत्र (यीशु) दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परंतु अनंत जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर का अस्तित्व है और वह आपसे एक व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहता है और आपके जीवन का एक जीवंत और वास्तविक हिस्सा बनना चाहता है—अभी और अनंत काल तक। आप बाइबल में परमेश्वर, उसकी मानवता के प्रति प्रेम, और आपके जीवन के लिए उसकी योजना के बारे में और अधिक जान सकते हैं।

यीशु आपके हृदय के द्वार पर खड़े हैं, यह प्रतीक्षा करते हुए कि आप दरवाज़ा खोलें और उन्हें अपने जीवन में आमंत्रित करें। (देखें प्रकाशितवाक्य 3:20)। आप यह सच्चे मन से यह प्रार्थना करके कर सकते हैं:

यीशु, कृपया मेरे सभी पापों को क्षमा करें। मैं विश्वास करता/करती हूँ कि आपने मेरे लिए प्राण दिए। मैं अपने हृदय का द्वार खोलता/खोलती हूँ और आपको अपने जीवन में आमंत्रित करता/करती हूँ। कृपया मुझे अपने प्रेम और पवित्र आत्मा से भर दें, मुझे आपको जानने में मदद करें और सत्य के मार्ग में मेरा मार्गदर्शन करें। आमीन।

© 2022 Activated
To learn more, visit our website at: https://activated.org/en/.

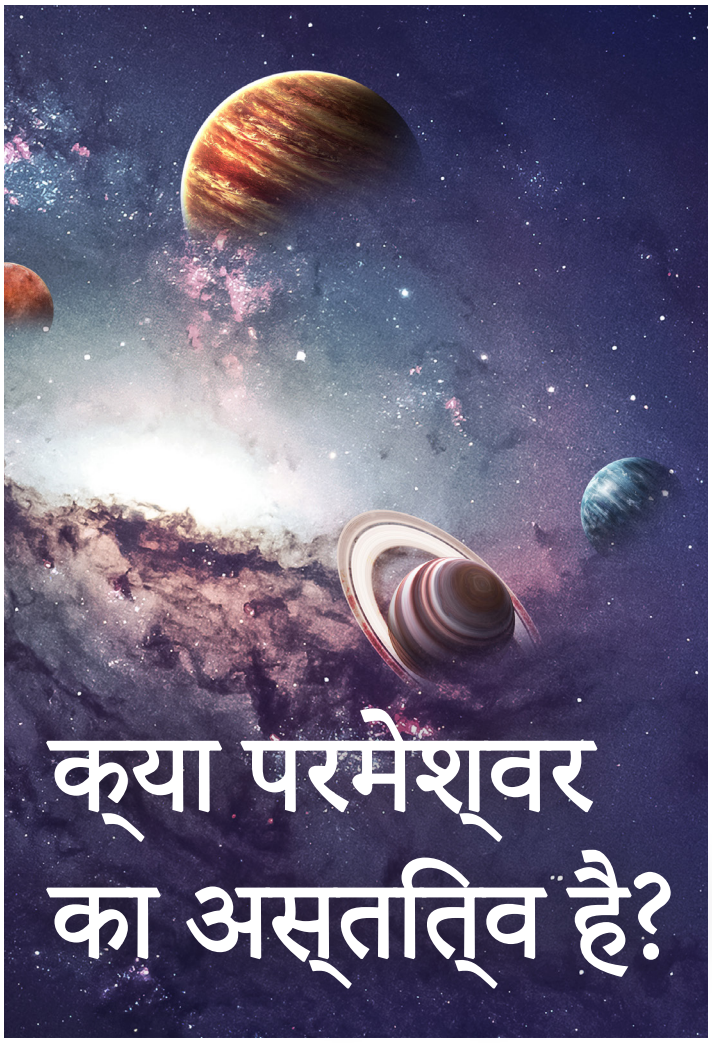

मुझसे), कि उसने अपना एकलौता पुत्र (यीशु) दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परंतु अनंत जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर का अस्तित्व है और वह आपसे एक व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहता है और आपके जीवन का एक जीवंत और वास्तविक हिस्सा बनना चाहता है—अभी और अनंत काल तक। आप बाइबल में परमेश्वर, उसकी मानवता के प्रति प्रेम, और आपके जीवन के लिए उसकी योजना के बारे में और अधिक जान सकते हैं।

यीशु आपके हृदय के द्वार पर खड़े हैं, यह प्रतीक्षा करते हुए कि आप दरवाज़ा खोलें और उन्हें अपने जीवन में आमंत्रित करें। (देखें प्रकाशितवाक्य 3:20)। आप यह सच्चे मन से यह प्रार्थना करके कर सकते हैं:

यीशु, कृपया मेरे सभी पापों को क्षमा करें। मैं विश्वास करता/करती हूँ कि आपने मेरे लिए प्राण दिए। मैं अपने हृदय का द्वार खोलता/खोलती हूँ और आपको अपने जीवन में आमंत्रित करता/करती हूँ। कृपया मुझे अपने प्रेम और पवित्र आत्मा से भर दें, मुझे आपको जानने में मदद करें और सत्य के मार्ग में मेरा मार्गदर्शन करें। आमीन।

© 2022 Activated
To learn more, visit our website at: https://activated.org/en/.

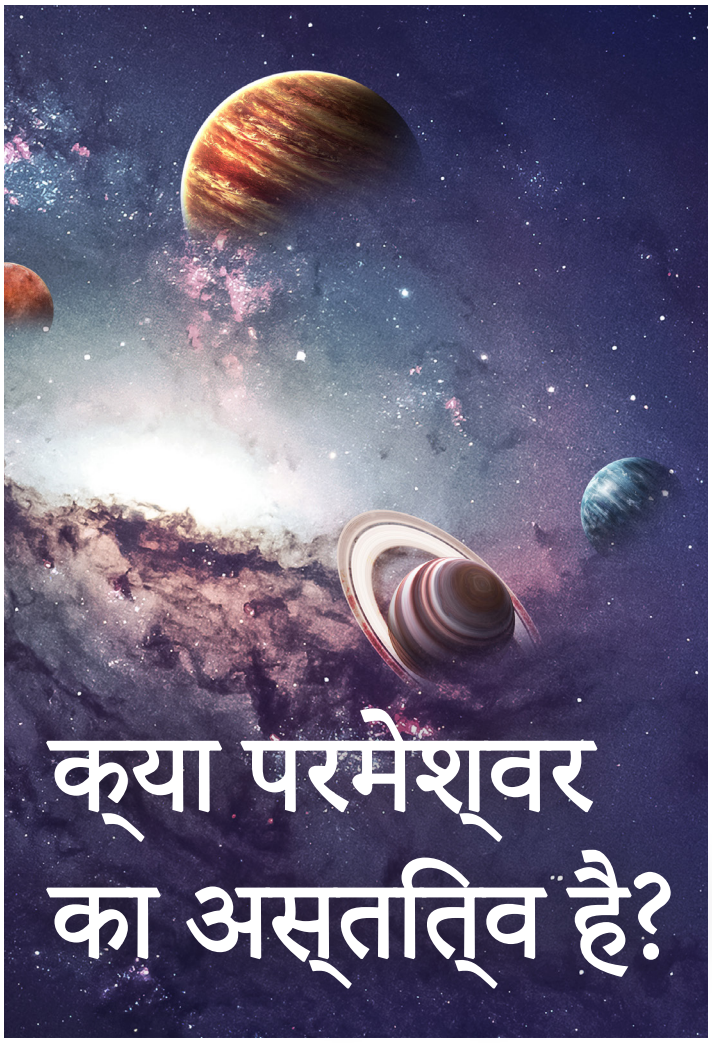

यह जीवन के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक है, जिस पर कोई भी व्यक्ति विचार कर सकता है। परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में आपका विश्वास, जीवन के अर्थ, मानवता और अंतिम नियति के प्रति आपके दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करता है।

दुनिया के कुछ प्रमुख धर्म एक व्यक्तिगत परमेश्वर में विश्वास नहीं करते या उसकी पूजा नहीं करते। इसके बजाय, उसे ब्रह्मांड के मूल में स्थित एक सर्वोच्च वास्तविकता, अंतिम सिद्धांत या पूर्ण सत्ता के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार के परमेश्वर की धारणा में, उसे प्रायः एक ऐसे अस्तित्व के रूप में माना जाता है जो मानव आवश्यकताओं और परिस्थितियों से दूर और अलग-थलग रहता है। लेकिन बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर हममें से प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत रूप से चिंतित है, और "जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा उन पर दया करता है जो उससे प्रेम करते हैं" (भजन संहिता 103:13)।

कुछ अन्य धर्म, प्रकृति की अद्भुत व्यवस्था और संतुलन को देखकर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि भौतिक सृष्टि ही परमेश्वर है, और जो कुछ हम देखते हैं वह परमेश्वर की अभिव्यक्ति या उसका हिस्सा है। चूँकि वही वह महान शक्ति है जिसने सब कुछ रचा है, इसलिए एक अर्थ में परमेश्वर हर चीज का हिस्सा है और हर चीज उसका हिस्सा है—स्वर्ग के विशाल आकाशगंगाओं से लेकर सबसे छोटे परमाणु की एकता तक। लेकिन बाइबल हमें बताती है कि हम अपने सृष्टिकर्ता की आराधना कर सकते हैं और उसे व्यक्तिगत रूप से जान सकते हैं, और परमेश्वर के साथ एक जीवित संबंध रख सकते हैं।

परमेश्वर कोई दूरस्थ, उदासीन अस्तित्व नहीं है। वह एक व्यक्तिगत परमेश्वर है जो अपनी सृष्टि के साथ संबंध रखना चाहता है। उसने अपने वचन—बाइबल—के माध्यम से स्वयं को हम पर प्रकट किया है। वह हममें से प्रत्येक व्यक्ति में रुचि रखता है। उसने हमारे लिए उसके साथ अनंत जीवन बिताने का मार्ग बनाया है—उद्धार के माध्यम से।

परमेश्वर नहीं चाहता कि हम उससे अलग हो जाएँ। जब तक हम परमेश्वर और उसके प्रेम को नहीं जान लेते, तब तक हमारे हृदय कभी भी सच्चे अर्थों में संतुष्ट नहीं हो सकते, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। हमें अपने बारे में जानने में मदद करने और हमें अपना अनंत जीवन और उद्धार देने के लिए, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को लगभग 2000 वर्ष पहले इस पृथ्वी पर भेजा।

यीशु का जन्म परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चमत्कारिक रूप से हुआ और वह परमेश्वर का जीवित प्रतिनिधित्व बन गए, ताकि हम देख सकें कि यह महान अदृश्य सृष्टिकर्ता कैसा है। और वह चरित्र प्रेम के परमेश्वर का है, क्योंकि यीशु हर जगह भलाई करते गए, दूसरों की सहायता करते रहे, और परमेश्वर के महान प्रेम के बारे में सबको सिखाते रहे।

जब यीशु ने संसार को उद्धार का शुभ संदेश देने का कार्य पूरा कर लिया, तो उन्होंने समस्त मानव जाति के पापों के लिए क्रूस पर अपने प्राण दे दिए। उनके मृत शरीर को कब्र में रखने के तीन दिन बाद, यीशु मृतकों में से जीवित हो उठे, और मृत्यु व नरक पर सदा के लिए विजय प्राप्त की।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा (तुमसे और

यह जीवन के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक है, जिस पर कोई भी व्यक्ति विचार कर सकता है। परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में आपका विश्वास, जीवन के अर्थ, मानवता और अंतिम नियति के प्रति आपके दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करता है।

दुनिया के कुछ प्रमुख धर्म एक व्यक्तिगत परमेश्वर में विश्वास नहीं करते या उसकी पूजा नहीं करते। इसके बजाय, उसे ब्रह्मांड के मूल में स्थित एक सर्वोच्च वास्तविकता, अंतिम सिद्धांत या पूर्ण सत्ता के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार के परमेश्वर की धारणा में, उसे प्रायः एक ऐसे अस्तित्व के रूप में माना जाता है जो मानव आवश्यकताओं और परिस्थितियों से दूर और अलग-थलग रहता है। लेकिन बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर हममें से प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत रूप से चिंतित है, और "जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा उन पर दया करता है जो उससे प्रेम करते हैं" (भजन संहिता 103:13)।

कुछ अन्य धर्म, प्रकृति की अद्भुत व्यवस्था और संतुलन को देखकर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि भौतिक सृष्टि ही परमेश्वर है, और जो कुछ हम देखते हैं वह परमेश्वर की अभिव्यक्ति या उसका हिस्सा है। चूँकि वही वह महान शक्ति है जिसने सब कुछ रचा है, इसलिए एक अर्थ में परमेश्वर हर चीज का हिस्सा है और हर चीज उसका हिस्सा है—स्वर्ग के विशाल आकाशगंगाओं से लेकर सबसे छोटे परमाणु की एकता तक। लेकिन बाइबल हमें बताती है कि हम अपने सृष्टिकर्ता की आराधना कर सकते हैं और उसे व्यक्तिगत रूप से जान सकते हैं, और परमेश्वर के साथ एक जीवित संबंध रख सकते हैं।

परमेश्वर कोई दूरस्थ, उदासीन अस्तित्व नहीं है। वह एक व्यक्तिगत परमेश्वर है जो अपनी सृष्टि के साथ संबंध रखना चाहता है। उसने अपने वचन—बाइबल—के माध्यम से स्वयं को हम पर प्रकट किया है। वह हममें से प्रत्येक व्यक्ति में रुचि रखता है। उसने हमारे लिए उसके साथ अनंत जीवन बिताने का मार्ग बनाया है—उद्धार के माध्यम से।

परमेश्वर नहीं चाहता कि हम उससे अलग हो जाएँ। जब तक हम परमेश्वर और उसके प्रेम को नहीं जान लेते, तब तक हमारे हृदय कभी भी सच्चे अर्थों में संतुष्ट नहीं हो सकते, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। हमें अपने बारे में जानने में मदद करने और हमें अपना अनंत जीवन और उद्धार देने के लिए, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को लगभग 2000 वर्ष पहले इस पृथ्वी पर भेजा।

यीशु का जन्म परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चमत्कारिक रूप से हुआ और वह परमेश्वर का जीवित प्रतिनिधित्व बन गए, ताकि हम देख सकें कि यह महान अदृश्य सृष्टिकर्ता कैसा है। और वह चरित्र प्रेम के परमेश्वर का है, क्योंकि यीशु हर जगह भलाई करते गए, दूसरों की सहायता करते रहे, और परमेश्वर के महान प्रेम के बारे में सबको सिखाते रहे।

जब यीशु ने संसार को उद्धार का शुभ संदेश देने का कार्य पूरा कर लिया, तो उन्होंने समस्त मानव जाति के पापों के लिए क्रूस पर अपने प्राण दे दिए। उनके मृत शरीर को कब्र में रखने के तीन दिन बाद, यीशु मृतकों में से जीवित हो उठे, और मृत्यु व नरक पर सदा के लिए विजय प्राप्त की।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा (तुमसे और